पशुओं में संक्रामक गर्भपात

डा0 शिव प्रसाद एवं डा0 एस0 सी0 त्रिपाठी
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय
गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय,पन्तनगर– 263145 (ऊधमसिंह नगर)

स्वस्थ्य पशुओं में साधारणतः गर्भकाल 272–282 दिन का होता है तथा गर्भकाल पूर्ण होने पर नवजात शिशु का जन्म होता है। लेकिन कभी–कभी यह देखा गया है कि पशु के जननांगों में संक्रमण या अन्य विकार उत्पन्न हो जाते है। जिससे गर्भ में ही बच्चे की मृत्यु हो जाती है या गर्भकाल पूर्ण होने से पूर्व ही बच्चा बाहर निकल आता है जिसे गर्भपात कहते है। गर्भपात होने से कृषक भाइयों को अनेक तरह के नुकसान उठाने पड़ते है जैसे बच्चे की हानि, दुग्ध उत्पादन में कमी तथा समय से गर्भ न धारण करना इत्यादि।

कारण

गर्भपात होने के विभिन्न कारण है जो कि गर्भकाल की विभिन्न अवस्थाओं पर अपना असर डालती है जिससे विषाणु, जीवाणु, प्रोटोजोआ, कवक, तेज रासायनिक पदार्थ या अन्य भौतिक कारक हैं। जीवाणुओं में कुछ मुख्य हैं जो कि गर्भकाल की निश्चित अवस्था में ही जननांगों को प्रभावित करते हैं जिससे शिशु की मृत्यु हो जाती है। जैसे ब्रुसैल्लोसिस बीमारी जो कि ब्रुसैल्ला *एबार्टस* जीवाणु द्वारा होती है। इस बीमारी से ग्रसित पशु में गर्भपात 6 महिने या इससे अधिक अवधि के मध्य में होता है जिससे भारी आर्थिक नुकसान होता है। विब्रियोसिस बीमारी भी जीवाणुओं द्वारा फैलाई जाती है जो कि *विब्रियो फीटस* जनित है। इस बीमारी से ग्रसित पशु में गर्भपात साधारणतः 3–4 महीने की अवधि में होता है। तीसरी मुख्य बीमारी *ट्राइकोमोनास फीटस* नामक प्रोटोजोआ द्वारा फैलती है। इस बीमारी से ग्रसित पशुओं में गर्भधारण के एक सप्ताह से लेकर 2 महीने तक की अवधि में शिशु की मृत्यु हो जाती है। गर्भपात गर्भकाल की किसी भी अवधि में हो सकता है तथा इसके कारक विभिन्न प्रकार के होते है।

लक्षण

1. कम अवधि के गर्भपात बिना लक्षण प्रदर्शित किये निकल जाते हैं।
2. बार–बार मद चक्र प्रदर्शित करना तथा गर्भ न ठहरना।
3. योनि से गंध युक्त पदार्थ निकलना।
4. बच्चेदानी में सूजन के कारण लगातार दर्द अनुभव करना।
5. असमय दुग्ध स्राव तथा अयन में सूजन।
6. जेर का लटकना तथा आसानी से न निकलना।

रोकथाम एवं उपचार

1. चूंकि ये रोग संक्रमित नर से मादा में या मादा से नर में गर्भाधान के दौरान फैलते हैं अतः संक्रमित नर से गर्भाधान न करायें।
2. संक्रमण से बचने के लिए कृत्रिम गर्भाधान करायें।
3. प्रभावित पशुओं को तुरन्त स्वस्थ पशुओं से अलग कर लें।
4. गर्भपात से निकले मृत बच्चों तथा जेर को भली–भाँति जमीन में गाढ़ दें या जला दें।
5. पशु बाड़े में जंगली जानवरों, नेवलों, कौवों को पहुँचने से बचाएं।

6. संक्रमित बाड़े में प्रयुक्त दाने की ट्राली तथा अन्य मशीनरी को स्वस्थ बाड़े में न लें जायें।
7. संक्रमित बाड़े में लगे व्यक्तियों का प्रयोग स्वस्थ बाड़े में किसी कार्य हेतु न करें।
8. ब्रुसेल्लोसिस बीमारी से बचने के लिए सभी मादा बंछियों की 6 महिने की उम्र पर टीकाकरण अवश्य करवायें।
9. संक्रमित वीर्य अथवा नर से गर्भाधान न करवायें।
10. विब्रियोसिस एवं ब्रुसेल्लोसिस से सक्रंमित गाय या भैंस को टैट्रासाइक्लीन 10–20 मि.ग्रा.प्रति कि.ग्रा. शरीर भर के अनुसार तथा स्ट्रेप्टामाइसिन 2.5 ग्रा. मांसपेशियों में प्रतिदिन की नियमित खुराक पशु चिकित्सक की सलाह एवं परीक्षण के पश्चात् बच्चेदानी तथा मांसपेशियों में लगातार कम से कम 5 दिन तक डलवायें तथा सुई के रूप में मांसपेशियों मे लगवायें।
11. ट्राइकोमोनियेसिस से सवंमित पशु को मेट्रोनिडाजॉल या डाइमेट्रोनेडाजॉल की नियमित खुराक से उपचार करें।